454

गणिका की बेटी

"सुमन..., बेटी तू इतना जल्दी मत सोओ...। चलो जल्दी उठो..., माँ तो अभी-अभी जानेवाली हुं....।" सुमन के कान में माँ की फुसफुसाहट भरी आवाज़ गूँजा। पता नहीं, वह कैसे इतनी जल्दी सो गयी थी, घडी में अभी भी 'सात' की मुस्कुराहट है।

"माँ..., आप आज भी ....., मुझे भी लेकर जाना माँ....." तेल के बिना, किसी भूरी पंछी जैसे मंडराते हुए, अपने लाल को पकडकर सुमन जो कहा, माँ तो आज भी उसे कान नहीं दिया। कान देना है तो किस-किस बात पर उसे देना कान कैसे देता ही रहना है?

"बेटी.., मैं अभी-अभी खाना लेकर वापस आती हुं। रात तो हो गयी है न? मुन्नी रोयेंगे, देखो, मैं रसोई में दूध उबालकर रखा हुं, उसे मुन्नी को पिला दो, मुझे पीछे से मत बुलाना...।" माँ की आवाज में सदा के जैसा क्रोध का अंश फैला हुआ था तो सुमन कुछ भी नहीं बोला। उसे पता था, जब उसके माँ वापस आएँगे, तभी खाने के लिए कुछ रोटी मिलेगी..., नहीं तो आज भी...।

माँ जा रही है। सदा के जैसे, मुड़कर न देखते हुए। एक बार और अपने बच्चों को मुड़कर देखने की आशा थी उसे। पर कैसे...? अगर आज भी वहाँ जल्दी न पहुँचे तो, उसके स्थान पर कोई और पैसा कमा देगी। ~~इस अंधेरे गली में अकेले चलते पर भी उसे कुछ अजीब सा नहीं लग रहा था, क्योंकि वह सदा ही ऐसे ही हूँ न?~~ इतनी अंधेरे में, अपने बच्चों को अकेले बिठाकर...। सिर्फ नाम के लिए ही माँ बनने में उसे अपने से ही घृणा हो रही थी। परन्तु विधी के लहरों ने ही उसे अब ऐसा बना दिया हूँ न...? "अगर मुझे भी एक अन्धे की लकड़ी था तो" उसके मन से खून ने ऊँचे आवाज़ में, आसमान में भगवान को देखकर बोला। पर कैसे, इस भगवान ने ही अपने बच्चे को स्कूल रिपोर्ट में लिखने के लिए एक बाप के नाम नहीं दिया हूँ न...? आज भी उस गलियों में बारिश के बूँदे गिरी। आसमान से नहीं, उस बदनसीब नारी के आँखों से...।

- आवाज़ की लहरें कहीं से लोमड़ी के कूदते हुए रात को कुछ और गहरा बना दिया था..। चाँद की प्रेयसी, चाँदनी, पता नहीं आज कहाँ जाकर छिपा। वह आँसू अभी भी चलता ही रहा...। पता नहीं आज भूख की हाथों उसे क्यों और सघन से पकड़ा हुआ था, क्यों प्यास की तीर उसके शरीर को खाकर हँस रही थी...। परन्तु उस नारी को इस दुनिया एक गेंद जैसे लग रहा है, जो भगवान के हाथों से इधर उधर घूम रही है। ~~बच्चों के चेहरा अभी भी उसे~~ बच्चों की भूखी चेहरा अभी भी उसे आकुलित बना रही थी...। परन्तु गरीबी.....। गरीबी ने ही आज उसे ऐसे बना लिया है न? सबको देखकर हँसने के लिए एक खिलौना।

"पी...पी..." अंधेरे भरी रास्ते से जल्दी-जल्दी भागते हुए वह अंधा गाड़ी वह नारी को नहीं देखा था...। वह, गरीबी की सहेली को गाड़ी ने टकराकर, एक विजय की सीटी बजाकर चली गयी थी।

"सुमन .... बेटी ..." खून ने रंग कैसा भी लाये हुए होंठ से वह ऊँचे सुर में बोला। परन्तु कौन सुनेगा...। "सुमन ... माँ के जैसी मत हो जा।" किसी और के साथ अपने बच्चों के भूख मिटाने के लिए, अपने अभिमान को मारकर खाए हुए नारी को धरती दया के साथ देखी।

"माँ ....।" सुमन अपने आँखों को पोंछा..। हाँ ...। वह अभी भी उसी कुरसी पर ही बैठा है..। लेकिन सपने की किला उसे कहीं और साथ ले गया था। पुलिस अफसर अभी भी सामने ही है। और चोरी-खूनी सब वैसे ही अपने कड़ी के ओर से भोले-भाले बच्चों के तरह सुमन को देखते ही रहे हैं..। पता नहीं, कैसे इतनी जल्दी वह सो गयी थी। अफसर बाबू अभी भी किसी महिला को अपने ऊँची आवाज और बड़ी मूँछों से डराता है।

"अरे.. जोसफ, इसने क्या किया है?" अपने काम पर पूरे ध्यान रखनेवाले पुलीस के आवाज सुमन के कण्ठ से निकले।

"ये तो कोई और के साथ रहकर पैसा कमाते हैं
मासूम जी, ये हैं वेश्या, गणिका की बेटी ....." सुमन के
कानों में वह आवाज़ एक बार और गिरा जो वह
सदा के लिए भूलना चाहती थी.. । बचपन की
यादों ने एक बार उसे अपने तीर से चोट पहुँचा
दिया । "गणिका की बेटी .." आसमान के ~~कोन~~
किसी कोने से ईश्वर मुस्कुराहट के साथ बोली...।